हिंदी को लेकर शिक्षा जगत में देखने को मिलता है सबसे ज्यादा डर

द संस्कार वैली स्कूल में बच्चों से रूबरू हुए प्रसिद्ध कवि राजेश जोशी ने कहा

हिंदी रिपोर्टर | भोपाल

हिंदी भाषा की अपनी एक रागात्मकता है, उसमें एक लय है। हम भले ही कितने भी विदेशी हो जाएं, विदेशी भाषा को अपना लें, लेकिन अपनी जड़ों और भाषा से दूर नहीं जा सकते। हम हिंदी में सोचते हैं, इसी भाषा में दिनभर बात करते हैं। इसलिए हिंदी भाषा को लेकर जो डर है वह उचित नहीं। प्रसिद्ध कवि, आलोचक और लेखक राजेश जोशी ने यह बात कही। वे द संस्कार वैली स्कूल में बच्चों के साथ संवाद कर रहे थे।

हिंदी के भविष्य को लेकर पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने इसे तात्कालिक बताते हुए कहा कि भाषा को लेकर जो डर है, वह शिक्षा जगत में ज्यादा है, क्योंकि हमने हिंदी को पाठ्य पुस्तक के ज्ञान तक सीमित कर दिया। जरूरत इस बात की है कि हिंदी को पाठ्य पुस्तक से इतर मनोरंजन की दृष्टि से भी पढ़ाया जाए। उनका कहना था कि ज्ञान की दृष्टि से जो पढ़ाया जाता है वह बच्चों में डर पैदा करता है। एक साहित्यकार को पुरस्कार की कितनी दरकार होती है, के सवाल पर वे बोले कि केवल तब तक जब तक उससे पैसे मिलते रहें। उन्होंने कहा कि पुरस्कार मुझे खुशी नहीं देते, क्योंकि उससे आपमें एक जिम्मेदारी बढ़ जाती है और आप अपने आपको एक सेलिब्रिटी समझने लगते हैं। बच्चों और शिक्षकों के अनुरोध पर श्री जोशी ने अपनी दो कविताओं का वाचन भी किया। उन्होंने द संस्कार वैली स्कूल की विजिट करते हुए स्कूल परिसर की तारीफ की।

संवाद कार्यक्रम के दौरान राजेश जोशी से सवाल पूछते स्टूडेंट्स।